एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पशुओं के लिए जई के हरे चारे की महत्ता

(*राजेश[1], विजेन्द्र कुमार[1] एवं मनोज कुमार[2])
[1]भा. कृ. अनु. प. - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली -११००१२
[2]सहायक प्रोफेसर, अखिल भारतीय बाजरा समन्वित अनुसंधान परियोजना, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
* rjshroshan579@gmail.com

जेई हरे चारे के लिए उगाई जाने वाली मुख्य रबी की फसल है। जेई में पोषक तत्वों की मात्रा व उपलब्धता भी अधिक होती है। जेई पोएसी कुल की मुख्यत उगाई जाने वाली हरे चारे की फसल है। जेई में मुख्यत 10-12 % प्रोटीन एवं 30-35% शुष्क पदार्थ पाये जाते है जेई साइलेज व है बनाने हैतु भी उपयोग में की जाती है।

उत्पति स्थल :- जेई का उत्पति स्थल एशिया माइनर व मेडिटेरनियन क्षैत्र माना गया है। जेई विश्व में सबसे ज्यादा क्षेत्रफल एवं उत्पादन रूस, कनाडा एवं स्पेन में है। भारत में जेई पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश मुख्य राज्य है जहाँ इसका सबसे सर्वाधिक क्षेत्रफल एवं उत्पादन होता है।

उपयुक्त जलवायु :- जेई सम शीतोष्ण जलवायु की फसल है। जो सामानयतः रबी मौसम में उगाई जाती है जेई की अच्छी वर्द्धि व पैदावर के लिए कूल व नम मौसम की आवश्यकता होती है। जेई की अच्छी वर्द्धि के लिए उपयुक्त तापमान 20-25 *C होना चाहिए।

उपयुक्त मृदा एवं उसकी तैयारी :- जेई की खेती सभी प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है जिनकी जल निकास समता और कार्बनिक पदार्थ की मात्रा अच्छी हो लेकिन दुमटी मृदा सबसे उपयुक्त मानी गयी गई है जिसका पी एच् मन 5-6.6 के बीच हो। प्रायः खरीफ की फसलो के बाद की बुवाई की जाती है। अतः पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से व दो तीन जुताइयॉ कल्टीवेटर से करके पाटा जा सकता है।

बुवाई का उपयुक्त समय :- जेई रबी मौसम में बोई जाने वाली हरे चारे की मुख्य फसल है बुवाई का उपयुक्त समय मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर में माना गया है बरसात वाले क्षत्रों में मर्दा नमी के अनुसार अक्टूबर महीने का प्रथम सप्ताह उपयुक्त है। सिचाई वाले क्षत्रों में नवम्बर महीने के अंत तक बुआई की जा सकती है। चारे वाली किस्मों की बुवाई के लिए 15th अक्टूबर उपयुक्त समय रहता है।

उन्नत शील किस्में :-

1. केंट - भारत वर्ष में उगाई जाने वाली मुख्य किस्म है जो ऑस्ट्रेलिया से लायी गयी थी। पौधे की उचाई 75-80 cm तक होती है। सबसे अधिक उपज देने वाली किस्म है इसकी उपज 60-65 t/ha. होती है।
2. अल्जेरियन- यह किस्म मुख्यतः सिचाई वाले क्षत्रों के लिए उपयुक्त है। पौधे की औसत उचाई 100-120 cm तक होती है। इसकी उपज 40-45 t/ha. होती है।
3. बंकर-10 - मध्य मौसम में उगाई जाने वाली मुख्य किस्म है जिसकी वर्द्धि बहुत तेजी से होती है। इसकी उपज 40 t/ha. होती है
4. कोचमैन - USA से लाई गई थी जिसकी उपज 50 t/ha. होती है।
5. HFO-114 - मल्टीकट व दोहरे उपयोग वाली मुख्य किस्म है जिसकी उपज 50-55 t/ha. होती है।
6. JHO-851 - यह किस्म पुरे भारत के लिए उपयुक्त है।

अन्य किस्में - क्रैग, आफ्टरली एवं फ्लेमिंग गोल्ड इत्यादि।

बीज दर:- छोटे दाने वाली किस्मों के लिए 80-90 kg/ha. बड़े दाने वाली किस्मों के लिए 100 kg/ha. बीज उपचार के लिए एजोटोबैक्टर जैविक उर्वरक का उपयोग करते है। कूडो में बुवाई 20-25 सेमी. दूरी पर लाइनों में करते है। बुवाई के बाद खेत को लम्बी- लम्बी क्यारियो में बॉट लेते है। इससे बैला या ट्रैक्टर चालित मशीनों से भी कटाई सम्भव है।

बुआई की विधि:- जेई की बुआई के लिए दो विधियां उपयोग की जाती है (अ) छिटकवा विधि द्वारा- इस विधि में किसान जेइ के बीजों को पहले से ही तैयार खेत में हाथ से छिड़क देता है। (ब) लाईन में बुआई - इस विधि में सीड ड्रिल का उपयोग किया जाता है। यह विधि सिंचाई वाले क्षत्रों में बहुत प्रचलित है।

सिंचाई प्रबंधन :- जेई की फसल में 4-5 सिंचाई की जरुरत होती है। सामान्यतः प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई करना उपयुक्त रहता है। जेइ में सिंचाई हैतु क्रांतिक अवस्था कल्ले निकलने तथा फूल आने के समय सिचाई आवश्यक है।

खरपतवार प्रबंधन :- जेइ में कसनी नामक खरपतवार मुख्यतः पाया जाता है। बीज को खेत में बोने से पहले 10% नमक के घोल में डालकर कासनी के बीजों को अलग करना सबसे उपयुक्त विधि है। कासनी को खड़ी फसल में नियंत्रण करने के लिए 2-3 हैंड वीडिंग जो की बुआई के 20-30 दिन बाद करते है।

पोषक प्रबंधक:- 12.5 t/ha की दर से गोबर की खाद खेत में अंतिम जुताई के समय डालनी चाहिए। जेइ की फसल में 80 kg नत्रजन, 40 kg फॉस्फोरस एवं 20 kg पोटाश प्रति हैक्टर की दर से आवश्यकता होती

है । प्रति है. 60 किग्रा. नत्रजन और 40 कि०ग्र० फास्फोरस अन्तिम जुताई के समय भूमि मे मिला दे। 20 कि०ग्रा० नत्रजन दो बार बराबर मात्रा में पहली बुवाई के 20-25 दिन बाद द्विडकर कर सिचाई कर देना चाहिये। तथा दूसरी मात्रा इसी तरह पहली कटाई के बाद देनी चाहियें। जिस भूमि मे सल्फर कम हो उसमें 20 किग्रा० सल्फर का प्रयोग अच्द्दी उपज देता है।

कीट एवं रोग प्रबंधक :- दीमक - एक मात्र कीट दीमक लगता है इससे बचाने के लिए 1.3 प्रतिशत लिण्डेन धूल 24 कि.ग्रा./है. की दर से बुवाई के पहले खेत मे मिला दे।

आवृत कण्डुआं रोग - बीज को 3 ग्राम थीरम या जिंक मैगनीज कार्बेनेट 2.4 ग्रा/कि. दर से उपचारित कर लेना चाहिये।

बहु कटाई वाली किस्मों की प्रथम कटाई बुआई के 50-55 दिन बाद जब पौधे की उचाई 55-60 cm हो करनी चाहिए । इसके बाद 25-30 दिन के अंतराल में कटाई करते रहै ।

एकल कटाई वाली किस्मों के लिए 50% पुष्पण के समय करनी चाहिए जिससे फसल की गुणवत्ता भी बनी रहै और उपज भी अधिक हो ।

उपज :- जेई की उपज 500-600 क्विण्टल प्रति हैक्टर होती है ।

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)